gyanodaya prabha

दिसम्बर 2024
अंक 33

सम्पादकीय

“नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन
नव हर्ष तुम्हारा अभिनन्दन

हर नए साल के साथ एक नया उत्साह और ऊर्जा आती है। यह वह समय होता है जब हम पिछले वर्ष की घटनाओं का विश्लेषण करते हैं, अपनी उपलब्धियों की सराहना करते हैं और असफलताओं से मिलने वाली सीख को आत्मसात करते हैं। नया वर्ष न केवल समय के एक और चक्र की शुरुआत है, बल्कि यह हमारे जीवन में नई दिशा, नया साहस,नया आयाम और नए संकल्प लाने का भी अवसर है। यह हमें याद दिलाता है कि प्रत्येक दिन एक नई शुरुआत है, और हमें पिछले वर्ष से मिली सीख को लेकर नए संकल्प और नए लक्ष्य तय करने चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ ऐसी सकारात्मक घटनाएँ होती हैं जो उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। ये घटनाएँ हमें यह एहसास कराती हैं कि हमें किस दिशा में मेहनत करनी चाहिए और कहाँ सुधार की आवश्यकता है।

हम सभी को अपने जीवन में असफलताओं का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी परिस्थितियाँ हमारी उम्मीदों के मुताबिक नहीं बन पातीं और हमें परिणामों में असफलता मिलती है। लेकिन क्या असफलता के कारण हमें निराश होना चाहिए? बिल्कुल नहीं। असफलताओं से हमें यह सीखने का अवसर मिलता है कि हमें क्या बदलाव करने की आवश्यकता है, क्या सुधारने की आवश्यकता है। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने क्या खूब लिखा है -नर हो न निराश करो मन को ,कुछ काम करो कुछ काम करो ,जग में रहकर कुछ नाम करो |

नया साल न केवल हमें पुराने साल से जुड़ी सीख देता है, बल्कि यह हमें अपनी क्षमताओं को फिर से खोजने, नए लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी सोच को बदलने का अवसर भी प्रदान करता है। इस नए साल में हमें अपनी पूरी ऊर्जा और उमंग के साथ आगे बढ़ने का संकल्प करना चाहिए। हम अपने पुराने संकल्पों को फिर से जिंदा कर सकते हैं और उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। |

स्वामी विवेकानंद के अनुसार सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं, जिनका पालन करके हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं | ये सिद्धांत हैं -

1. आत्मविश्वास 2. कड़ी मेहनत और संघर्ष 3. स्पष्ट उद्देश्य और लक्ष्यों की स्पष्टता 4. आध्यात्मिक दृष्टिकोण,5. सकारात्मक सोच 6.लक्ष्य के प्रति समर्पण, 7.धैर्य और साहस 8.समझदारी से काम

वास्तव में आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है। विवेकानंद जी ने कहा था, "उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" आत्मविश्वास के बिना कोई भी कार्य

सफल नहीं हो सकता। हमें अपनी क्षमता पर विश्वास रखना चाहिए और कठिनाइयों का सामना करना चाहिए।

सफलता केवल भाग्य पर निर्भर नहीं होती, बल्कि निरंतर प्रयास, संघर्ष और परिश्रम से मिलती है। जो व्यक्ति मेहनत करता है, वह कभी असफल नहीं होता। सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य स्पष्ट रूप से जानें। बिना स्पष्ट लक्ष्य के जीवन में दिशा की कमी होती है। हमारे भीतर असीम शक्ति है। जब हम अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानते हैं और उसे सही दिशा में लगाते हैं, तो हम किसी भी चुनौती को पार कर सकते हैं। सफलता के लिए हमें अपने भीतर की दिव्यता को पहचानने की आवश्यकता है।

महापुरुषों ने कहा है कि- "जो जैसा सोचता है और करता है ,वह वैसा ही बन जाता है ।" सकारात्मक मानसिकता से हम न केवल अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में खुश रह सकते हैं। नकारात्मक सोच से जीवन में रुकावटें आती हैं, जबकि सकारात्मक सोच से अवसरों का निर्माण होता है।

हमें अपने लक्ष्य के प्रति पूरी तरह समर्पित रहना चाहिए। जब हम अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित होते हैं, तो हमारी मेहनत और प्रयास फलित होते हैं। अच्छे आचरण और नियमितता सफलता की कुंजी हैं । आदतें हमारे जीवन का आधार हैं और यही आदतें हमें सफलता की ओर ले जाती हैं। नियमित अभ्यास और आत्म-निर्णय सफलता की ओर पहला कदम है।इसके साथ ही यह आवश्यक है कि हमें मेहनत के साथ समझदारी से काम करना चाहिए । केवल शारीरिक मेहनत से ही सफलता नहीं मिलती ।उसके लिए रणनीति आवश्यक है |

सच तो यह है कि सफलता का रास्ता कभी आसान नहीं होता, इसमें कठिनाई और चुनौतियाँ आती हैं। लेकिन हमें इनसे घबराना नहीं चाहिए। धैर्य और साहस के साथ हमें आगे बढ़ना चाहिए।इन विचारों का पालन करके कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है, बशर्ते वह अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ नायक बने और जीवन में परिश्रम, सकारात्मकता और साहस बनाए रखे।

नया साल जीवन में आशा और उमंग का संचार करता है। यह हमें यह सिखाता है कि सफलता और असफलता दोनों ही जीवन के अहम् हिस्से हैं। जो हमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण सीख देता है, वह है निरंतर प्रयास, आत्मविश्वास और अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता। हमे पिछले साल की असफलताओं से निराश होने की बजाय, उन्हें एक शिक्षक की तरह अपनाना चाहिए। नया साल हमें अपने संकल्पों को साकार करने, अपनी गलतियों से सीखने और अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर देता है। आइए हम इस नए साल को पूरी ऊर्जा, उमंग और नए संकल्पों के साथ अपनाएँ और अपने जीवन को एक नई दिशा दें।

नए साल की बहुत बहुत शुभकामनाएँ |

दिसंबर माह की गतिविधियाँ

स्पिक मेके कार्यक्रम

दिनाँक 6 दिसंबर 2024 को हमारे विद्यालय ज्ञानोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में स्पिक मेके संस्था से जुड़े राजस्थानी लोक कलाकार बुन्दू खान और उनके साथियों द्वारा एक रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गयी | जिसमें लोक संगीत के साथ साथ राजस्थानी लोक नृत्य काल बेलिया,मटकी आदि नृत्य का प्रदर्शन किया गया |
बुंदू खान जी, राजस्थानी लोक संगीत के एक अद्वितीय रत्न हैं। उनकी कला सिर्फ एक प्रदर्शन नहीं, बल्कि राजस्थानी लोक संस्कृति का जीवंत रूप है। कालबेलिया संगीत और नृत्य, जिसकी धुन पर हर दिल थिरक उठता है, उसमें उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

उनकी मेहनत और समर्पण ने न केवल राजस्थानी संगीत को नई ऊँचाईयों पर पहुँचाया है, बल्कि भारत की इस अनमोल धरोहर को विश्व मंच पर भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर, राजस्थान की मिट्टी की खुशबू को हर कोने तक पहुंचाया है। आज उनका यहाँ होना, हमारे लिए गर्व का विषय है।

राजस्थानी लोकसंगीत राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा है, जो इसके विविध रंगों और परंपराओं को दर्शाता है। यह संगीत राजस्थान की मिट्टी, मरुभूमि, और लोगों के जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसमें भक्ति, वीरता, प्रेम, और प्रकृति का सुंदर समावेश देखने को मिलता है।

राजस्थानी लोकसंगीत में कई वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है, जैसे रावणहत्था, कमायचा, मंजीरा, ढोलक, और मोरचंग। ये जीवन की साधारण भावनाओं पर आधारित होती हैं। प्रसिद्ध शैलियों में पधारो म्हारे देश, मांड, पनिहारी,और भजन शामिल हैं। कालबेलिया, लंगा, और मंगनियार जैसे समुदायों ने इसे विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है। यह संगीत न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि राजस्थान की संस्कृति, इतिहास, और परंपराओं का जीवंत प्रतिबिंब भी है।

कार्यक्रम के आरंभ में प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ,सुश्री प्रियंका विश्वास एवं श्री उत्कर्ष गौतम ने पुष्पगुच्छ देकर कलाकारों को सम्मानित किया | कलाकारों ने कार्यक्रम की शुरूआत गणपति बंदना से की तत्पश्चात पधारो म्हारे देश, मस्त कलंदर ,निबुडा आदि प्रसिद्ध गीत प्रस्तुत किए गए |साथी महिला कलाकारों ने भी अपनी मनमोहक नृत्य प्रस्तुति से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया |कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ,उप प्राचार्य श्री संस्कार जैन एवं विद्यालय शिक्षक श्री रूपेश मिश्रा ,श्री राहुल अग्रवाल , श्रीमती प्रियंका जैन ने सभी कलाकारों को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया |कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने सभी कलाकारों का आभार व्यक्त किया | कार्यक्रम का संचालन डॉ कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव ने किया |

अंतरसदनीय समूह गान प्रतियोगिता

बुधवार 18 दिसंबर 2024 को नायकन हॉल में अंतर सदनीय समूह गान प्रतियोगिता हुई, जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के प्रतिभागी शामिल हुए।

(एक कच्चा घड़ा हूँ मैं) विवेकानंद सदन द्वारा (ओ रे चिरैया) टैगोर सदन द्वारा (राहगीरा मिला कबीर से) लक्ष्मी सदन द्वारा (मत कर माया को अभिमान) सरोजनी सदन द्वारा प्रस्तुत किया गया |इसमें लक्ष्मी और सरोजनी दोनों संयुक्त रूप से प्रथम विजेता रहीं। श्री सुलोव कर्मकार एवं श्री विवेक तिवारी ने निर्णायक का कार्यभार संभाला एवं सुश्री सुनाली यादव् ने मंच का सञ्चालन किया | इस कार्यक्रम के प्रभारी श्री उत्कर्ष गौतम थे |

पैलेट 2024 - सहोदय इंटर स्कूल पेंटिंग प्रतियोगिता

ज्ञानोदय एस.एम.व्ही.एम. सीनियर से. स्कूल द्वारा दिनाँक 14 दिसंबर 2024 को पैलेट 2024 सहोदय कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया |

इस कार्यक्रम में 11 विद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की |इस प्रतियोगिता में सीनियर श्रेणी में विजेता इस प्रकार थे - प्रथम स्थान - निकिता रॉय ,ज्ञानोदय एस.एम. व्ही. एम . सीनियर से. स्कूल ,द्वितीय स्थान - विद्या अहिरवार , निर्मल ज्योति हायर से. स्कूल बीना , तृतीय स्थान - चेष्टा गुप्ता ,डी.ए.व्ही. बी आर. पब्लिक स्कूल बीना एवं जूनियर श्रेणी में प्रथम स्थान काव्या जैन ,डी.ए. व्ही.बी .आर.पब्लिक स्कूल बीना ,द्वितीय स्थान सुमित जडिया ,निर्मल ज्योति हायर से.स्कूल बीना तथा तृतीय स्थान अनुकृति तिवारी नोबल पब्लिक स्कूल देवरी ने प्राप्त किया |

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ सुप्रभा दास (असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर) थे |गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ बलवंत सिंह भदौरिया विभागाध्यक्ष कला ,हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर ,विशिष्ट अतिथि -डॉ आकाश मालवीय थे |इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ सुप्रभा दास एवं सुश्री कोंपल जैन ने निभाई |
यह कार्यक्रम कला, रचनात्मकता और युवा अभिव्यक्ति का एक शानदार उत्सव था, जिसमें हमारे युवा कलाकारों ने अविश्वसनीय प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

केरियर काउंसलिंग

ज्ञानोदय में स्थित नायकन हॉल में कक्षा 10, 11 और 12 के छात्रों के लिए 13 दिसंबर को तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय द्वारा एक केरियर काउंसलिंग सत्र का आयोजन किया गया।

इस सत्र का उद्देश्य छात्रों को 12वीं के बाद उपलब्ध विभिन्न पाठ्यक्रमों और उनके केरियरनिर्माण में उपयोगिता के बारे में जागरूक करना था। सत्र का नेतृत्व विश्वविद्यालय के डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ श्री अंकित जैन ने किया, जिन्होंने डिजिटल मार्केटिंग के साथ-साथ अन्य आधुनिक पाठ्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला।

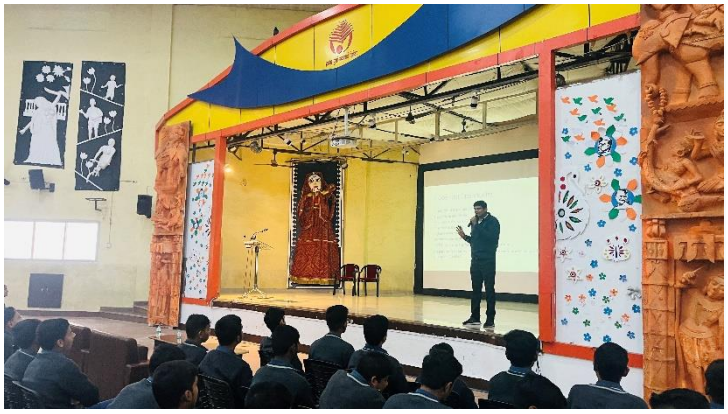

कार्यक्रम की शुरुआत सुश्री अनुजा मोदी द्वारा मंच संचालन से हुई। उन्होंने उपस्थित अतिथियों और छात्रों का स्वागत करते हुए सत्र के उद्देश्यों का परिचय दिया।

श्री अंकित जैन ने छात्रों को 12वीं के बाद उपलब्ध विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी जैसे- डिजिटल मार्केटिंग डेटा साइंस और एनालिटिक्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग ,व्यवसाय प्रशासन (BBA),कंप्यूटर साइंस,मल्टीमीडिया और ग्राफिक्स डिजाइनिंग,होटल मैनेजमेंट,,जर्नलिज्म और मास कम्युनिकेशन,फाइन आर्ट्स आदि पाठ्यक्रमों की विशेषताओं और केरियर संभावनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सत्र के दौरान छात्रों ने अपने सवाल और शंकाएं व्यक्त कीं, जैसे कि किसी कोर्स को चुनने के लिए क्या प्राथमिकताएं होनी चाहिए, पाठ्यक्रम की अवधि, स्कोप, और फ्यूचर जॉब ऑप्शन।

श्री अंकित जैन और अन्य विशेषज्ञों ने छात्रों के सभी सवालों के उत्तर दिए और उनके केरियर सम्बन्धी संदेह का निवारण किया।

प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्ला ने छात्रों को प्रेरणा दी कि वे अपने रुचि के अनुसार केरियर चुनें और उसे पूरे समर्पण और मेहनत से प्राप्त करें।उन्होंने बताया कि कैसे सही मार्गदर्शन और शिक्षा से छात्र अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।उन्होंने छात्रों को यह भी प्रेरित किया कि वे हर नई जानकारी और कौशल को आत्मसात करें।

कार्यक्रम का समापन प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्ला द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ। उन्होंने छात्रों, अभिभावकों, और अतिथियों को धन्यवाद दिया और विश्वविद्यालय के ऐसे सत्रों के महत्व को रेखांकित किया।यह सत्र छात्रों के लिए अत्यंत जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक साबित हुआ। छात्रों ने इसमें सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी शंकाओं का समाधान पाया और इसे बेहद उपयोगी बताया।

कार्यक्रम के प्रभारी श्री अशरफ एवं सुश्री अनुजा मोदी थीं ।

इंटर-हाउस खो खो प्रतियोगिता का आयोजन

ज्ञानोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खुरई में 14 दिसंबर 2024 को इंटर-हाउस खो खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में स्कूल के विभिन्न सदनों ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

सीनियर बालिका वर्ग के फाइनल मैच में, टैगोर सदन ने सरोजनी सदन को 6–4 से हराकर विजय हासिल की। टैगोर सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता का खिताब दिया गया।

जूनियर बालिका वर्ग के फाइनल मैच में, लक्ष्मी सदन ने विवेकानंद सदन को 8–4 से हराकर विजय हासिल की। लक्ष्मी सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता का खिताब दिया गया।

सीनियर बालक वर्ग के फाइनल मैच में, विवेकानंद सदन ने टैगोर सदन को 10–7 से हराकर विजय हासिल की। विवेकानंद सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता का खिताब दिया गया।

जूनियर बालक वर्ग के फाइनल मैच में, टैगोर सदन ने विवेकानंद सदन को 3–2 से हराकर विजय हासिल की। टैगोर सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता का खिताब दिया गया।

इस प्रतियोगिता का आयोजन स्कूल के खेल और शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया था। स्कूल के प्रधानाचार्य और अन्य अधिकारियों ने प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित रहकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

इस प्रतियोगिता के माध्यम से, स्कूल ने अपनी छात्राओं को खेल और शारीरिक शिक्षा के महत्व को समझने और अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर प्रदान किया।

अंतरसदनीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन

ज्ञानोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खुरई में 14 दिसंबर 2024 को अंतरसदनीय क्रिकेट प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में स्कूल के विभिन्न सदनों ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

पहला फाइनल मैच सीनियर बालक वर्ग में टैगोर सदन और विवेकानंद सदन के मध्य हुआ ,जिसमें टैगोर सदन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 ओवर में 45 रन का लक्ष्य दिया, जवाब में विवेकानंद सदन ने टैगोर सदन को 6 विकेट से हराकर यह लक्ष्य हासिल कर लिया और विजय हासिल की। विवेकानंद सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता का खिताब दिया गया।

दूसरा फाइनल मैच जूनियर बालक वर्ग में सरोजनी सदन एवं लक्ष्मी सदन के मध्य हुआ |
इस मैच में, सरोजनी सदन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 107 रन का लक्ष्य 6 ओवर में दिया, जवाब में लक्ष्मी सदन केवल 64 रन ही बना सकी और उसे हार का सामना करना पड़ा ।सरोजनी सदन की जीत के साथ, उन्हें विजेता घोषित किया गया।

इस प्रतियोगिता का आयोजन स्कूल के खेल और शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया था। स्कूल के प्रधानाचार्य और अन्य अधिकारियों ने प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित रहकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

इस प्रतियोगिता के माध्यम से, स्कूल ने अपने विद्यार्थियों को खेल और शारीरिक शिक्षा के महत्त्व को समझने और अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर प्रदान किया।

शिक्षकों का शैक्षणिक भ्रमण

दिनांक 22 दिसंबर 2024 को ज्ञानोदय विद्यालय ने शिक्षकों के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया |सुबह 7 बजे बस द्वारा यह यात्रा आरंभ की गयी |

वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व और आबचंद गुफाओं की हमारी हाल की यात्रा एक ऐसा रोमांच था जिसे

आने वाले सालों तक याद रखा जाएगा! ऊबड़-खाबड़ रास्तों से लेकर राजसी वन्यजीवों तक, हर पल रोमांच से भरा था।

हमें एक प्रतिष्ठित देवता को समर्पित प्राचीन टिकिटोरिया मंदिर में जाने और इसकी शांतिपूर्ण सुंदरता को देखने का सौभाग्य भी मिला।

वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व में शिक्षकों ने जंगल सफारी का आनंद लिया यहाँ राजसी बाघों, हिरणों और विभिन्न प्रकार के पक्षियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना सुंदर पगडंडियों पर ट्रेकिंग करना और रिजर्व के लुभावने दृश्यों का आनंद लेना एक रोमांचक अनुभव था ।

आबचंद गुफाओं की आश्चर्यजनक चट्टानी संरचनाएँ भी आकर्षण का केंद्र रहीं ।

इस यात्रा में सभी शिक्षकों ने भरपूर आंनद उठाया | प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ल ने सभी शिक्षकों का मार्गदर्शन किया | इस यात्रा के लिए सभी ने विद्यालय प्रबंधन का आभार व्यक्त किया |

न्यूक्लियर मेल्ट डाउन गतिविधि

28 दिसंबर 2024 शनिवार को कक्षा 11 वर्ग अ के विद्यार्थियों द्वारा नायकन हॉल में न्यूक्लियर मेल्ट डाउन गतिविधि का आयोजन किया गया |यह गतिविधि एक लघुनाटिका के रूप में प्रस्तुत की गई |

इसमें 20 छात्रों ने सहभागिता की |इस गतिविधि का विषय था - "पर्यावरण जागरूकता और सतत विकास लक्ष्य "इस गतिविधि का उद्देश्य ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर मुद्दे और पर्यावरण पर इसके प्रभाव के बारे में छात्रों के बीच जागरूकता बढ़ाना।तथा संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ तालमेल बिठाना और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में उन्हें प्रेरित करना था | इस गतिविधि के द्वारा जागरूकता के माध्यम से परिवर्तन को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया !

गतिविधि की शुरुआत एक लघु नाटिका से हुई जिसमें ग्लोबल वार्मिंग के विनाशकारी प्रभावों और परमाणु आपदाओं के संभावित खतरों पर प्रकाश डाला गया।
यह गतिविधि निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित थी -
1. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?
2. जल प्रदूषण और जल की बर्बादी को रोकने के लिए किन तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है?
3. क्या हमें जंगलों और अन्य प्रजातियों के आवासों को नष्ट करने का कोई अधिकार है?
4. पर्यावरण के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं?
इस गतिविधि की प्रभारी शिक्षिका सुश्री पूनम पठानिया थीं |

साहित्यिकी

विद्यार्थी कोना

राजस्थानी की महक उसका लोक संगीत

भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है | भारत के सभी राज्यों की अपनी संस्कृति और अपनी परम्पराएं हैं |राजस्थान भी इनमें से एक है | यहाँ का लोक संगीत अपनी विशेष धुनों, भावों और अनोखी प्रस्तुति के लिए जाना जाता है। ये संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि हमारे इतिहास, रीति-रिवाजों और लोक जीवन की कहानी भी बयां करता है। थार की माटी से उठती आवाजें, चंकी और मृदंग की तालें, और लोक गीतों के बोल, ये सब मिलकर राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को संजोते हैं।राजस्थानी लोक संगीत राजस्थान की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक है। इसमें ढोलक,कमायचा, सारंगी और पखावज जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। इसके गीत प्रेम, वीरता,भक्ति और त्योहारों पर आधारित होते हैं। मांड, पाबूजी की फड़, और मांगनियार-लंगास की प्रस्तुतियाँ इसकी प्रसिद्ध शैलियाँ हैं। यह संगीत राजस्थानी लोक जीवन की भावनाओं और कहानियों को जीवंत बनाता है।राजस्थानी लोक संगीत भारत के सबसे समृद्ध और विविध संगीत रूपों में से एक है। यह संगीत राजस्थानी संस्कृति, परंपराओं और जीवनशैली का एक अभिन्न हिस्सा है। राजस्थानी लोक संगीत में ढोलक, खड़ताल, कमायचा, सारंगी और पखावज जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। इसके गीत अक्सर प्रेम, वीरता, भक्ति, और प्रकृति के विषयों पर आधारित होते हैं।

- **ऋषिका श्रीवास्तव कक्षा 12 बी**

कैसे बना हमारा प्यारा टेडी बियर

14 नवम्बर 1903 में रूजवेल्ट, मिसिसिपी के एक जंगल में शिकार के लिए गए थे|उनका सहायक होल्ट किलिर भी साथ था |उसने एक घायल भालू को पकड लियाऔर पेड़ से बांध दिया ,फिर राष्ट्रपति से भालू को गोली मरने किकी अनुमति

मांगी पर रूसवेल्ट ने मना कर दिया | उस घायल भालू को देख कर उनका दिल पसीज गया |इससे सम्बंधित खबर 16 नवम्बर को अमेरिका के एक प्रतिष्ठित अख़बार में छपी |इस घटना पर आधारित एक तस्वीर छपी ,जिसे कार्टूनिस्ट किल्फोर्ड बेरिमेन ने बनाया था |इसके बाद ही इसको बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई| 15 फरबरी 1903 को मोरिस मिख्तम ने हाथ से बनाये गोल मटोल मासूम से दिखने वाले भालू की शक्ल के दो सॉफ्ट टॉय बाजार में उतारे तो इन्हें टेडी नाम दिया गया |यह टेडी बियर से दुनिया की पहली मुलाकात थी |

अमरीकी राष्ट्रपति से लेनी पड़ी थी परमिशन -ईस बात को बहुत कम लोग जानते है कि अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट को लोग प्यार से "टेडी"बुलाया करते थे|इसलिए मिख्तम को अपने टॉय का नाम टेडी रखने के लिए खास तौर से राष्ट्रपति रूजवेल्ट से इसकी इजाजत ली थी |इसके लिए उन्होंने बाकायदा उन्हें एक अर्जी भेजी और राष्ट्रपति ने ख़ुशी -ख़ुशी इसके लिए अपनी अनुमति दे दी|उसके उस वक़्त मिख्तम और रूजवेल्ट दोनों में से किसी को यह अहसास नही था कि एक दिन उनका यह खिलौना दुनिया भर के बच्चो की पहली पसंद बन जाएगा | बता दे कि पूरे विश्व में 10 फरवरी को टेडी डे मनाया जाता है |इसके बाद भी टेडी बियर अमेरिका में लोकप्रिय नही था |बात 1903 की है लिपिजिंग टॉय फेयर में जर्मन टॉय मेकर मार्गरेट स्टीफ़ ने तीन हजार टेडी बियर न्यूयार्क के एक खरीदार को बेच दिए |इसके बाद से यह प्रसिद्ध हुआ |

आध्या जैन
6 डी

तिरंगा

उस तीन रंग के कपडे ने मेरा दिल जीत लिया |

उसके खातिर अपनी गर्दन तक कुर्बान कर दूँ ,

मैंने कर ली अपने तिरंगे से मुहब्बत और इस मुहब्बत के

लिए अपनी जान तक न्योछावर कर दूँ ||

तिरंगा भारत के लोगो की पहचान है,

कोई हो या न हो, मेरा शरीर देश के लिए हर समय कुर्बान है

,

बदल देते हैं लोग अपना नाम विदेश जाकर ,

मेरा तो देश ही मेरा नाम है ||

कितनो का खून मिला इस मिट्टी में जानता हूँ मैं ,

कोई माने या न माने इस जमीं पर मैंने जन्म लिया ,

खुद को बहुत खुशनसीब मानता हूँ मैं ||

आदर्श दांगी कक्षा 8 डी

किताब के पन्ने

किताब के पन्नों पर
पत्ते झर जाते हैं ,
उस पत्ते के अन्दर के अक्षर पत्तों पर उतर जाते हैं ,
उन अक्षरों से गीत बन जाते हैं ||
किताब के पन्ने बहुत महत्वपूर्ण होते हैं,
किसी भी गुत्थी को सुलझाने के लिए पूर्ण होते हैं |
पन्नो के अक्षर उन पर उलझे होते हैं,
और पन्नो पर ही अक्षर सुलझे होते हैं |
इसलिए इस पन्ने का महत्त्व जानिए ,
उस पन्ने के ज्ञान को यूँ ही न मानिए ||
क्योंकि -
कागज के पन्ने से शिक्षा मिलती है ,शिक्षा से ज्ञान मिलता है ,

ज्ञान से सफलता मिलती है ,सफलता से नाम मिलता है ||

संकलन कर्ता शैली जैन
कक्षा 8 डी

कथन

1.देश की सेवा करने में जो मिठास है , वह और किसी चीज़ में नही |
सरदार पटेल

2.खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफ़ाजत में गिरे ,दुनिया की सबसे
अनमोल चीज़ है|
प्रेमचंद

3. खुशियाँ जीवन से नही बनती बल्कि खुशियों से जीवन बनता है |
अज्ञात

4.महलों में रहने वाला आदमी शासन नहीं चला सकता |
महात्मा गाँधी

5.जो ईश्वर को अपने पास समझता है ,वह कभी नहीं हारता |
महात्मा गाँधी

6.स्त्री में शारीरिक समर्थ भले ही कम हो ,उसकी वाणी में असीम सामर्थ्य है |
लक्ष्मीबाई केलकर

संकलन - बीनू - कक्षा 8 डी

आखिर क्यों ?

आखिर क्यों भारत की नारी

डरी पीड़ित सहमी सी है

सपने खंड विखंडित उसके

अपनों से ही छली हुई है !!

पूछ रही मैं अंबर से

इतिहास की अमर कहानी से

बाग में खिलती कलियों से

उषा की छिटकती किरणों से !!

कहाँ स्वर्ण दिवस वो गए

क्यों भाव सुमन सा बिखर गए

क्यों विश्वगुरु नतमस्तक है

क्यों जन जन में नारी भोग्या है !!

क्यों पीड़ित, दुखियारी, अबला बन

वह निरीह भाव से देख रही

क्यों आखिर ऐसा हुआ समाज

वसुधा में उसका मोल नहीं !!

क्या यही हमारी गाथा है

हुई नहीं है भूल कोई ?

बस बहुत हुआ...!

अब याद उन्हें फिर करना होगा

भारत की गौरव गाथा को

नारी शक्तिस्वरूपा जननी

हिन्द की मर्यादा को !!

जागो और जगाओ जग को

वरना देर हो जाएगी

युद्ध का शंख गूंज उठेगा

घोर अँधेरा छाएगी !! -२

-मान्या सिंह 'बिसेन' कक्षा - कक्षा 8

मेरी दुनिया

माँ तुम्हारी मोहब्बत अनमोल है अनंत

माँ तुम्हारी दुआओं से सफल है जीवन
तुम्हारे प्यार की बौछार से,
डांट और फटकार से
भविष्य है सुरक्षित मेरा
तेरे संघर्ष और त्याग से
तेरे होने से घर घर लगता माँ
मेरा जीवन रोशन लगता माँ !!

शब्द है नहीं तुझे बताने को
दिल-ए-एहसास तुझे जताने को
तेरे प्यार को क्या कहूँ माँ
तेरे आगे आंकती नहीं मैं खुदा को
श्रध्दा सुमन समर्पित है माँ
आपके श्री चरणों में
आशीष सदा बना रहे
चिर अनंत इस जीवन में !!

-दिशी जैन
कक्षा – 8 सी

"मेहनत का फल"

मेरे स्कूल में 10 बजे, हमारी शिक्षक कक्षा में आईं और हमें पंचमढ़ी के स्कूल ट्रिप के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि वहाँ कई स्कूलों के बच्चे आते हैं, जिनमें सैनिक स्कूल भी शामिल हैं, वहाँ कई रोचक गतिविधियाँ होती हैं। उन स्कूलों में कुछ छात्राएं भी होती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उनके पूर्वज सेना में थे, लेकिन न उनके पिता और न ही उन्होंने खुद सेना में शामिल होने का निर्णय लिया।

शिक्षिका हिमाचल प्रदेश में रहती हैं और उन्होंने नर्सरी से 10वीं तक हिंदी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाई की। 10वीं के बाद, वह विज्ञान विषय लेना चाहती थीं, लेकिन इसके लिए उन्हें अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में जाना पड़ा। उनका स्कूल उनके घर से 6 किलोमीटर दूर था, और जैसा कि हम जानते हैं, हिमाचल प्रदेश में बहुत सारे पहाड़ होते हैं। वहाँ जंगली जानवर भी होते हैं, इसलिए वह और अन्य बच्चे स्कूल जाते समय जोर-जोर से चिल्लाते थे ताकि जानवर डरकर भाग जाएं, क्योंकि तेज आवाज से वे भाग जाते थे ! पहले दिन, वह कक्षा में "टाईप ऑफ चार्जेस" से संबंधित सवाल नहीं समझ पाईं और उसका जवाब नहीं दे सकीं। वह एक बहुत होशियार छात्रा थीं, फिर भी उन्होंने इस वजह से बहुत रोया और उनके शिक्षक ने भी उन्हें डांटा।

कक्षा के बाद, उनके दोस्तों ने उनसे पूछा, "क्या तुम चार्जेस को समझ पाई हो?" उन्होंने कहा कि वह नहीं समझ पाई थीं कि शिक्षक ने क्या कहा था। फिर उनके एक दोस्त ने बताया "चार्जेस" के बारे में और तभी उन्होंने महसूस किया कि उन्हें हिंदी में यह शब्द बहुत अच्छे से समझ में आता है। उनके दोस्तों को यह समझ में आ गया कि वह हिंदी को बहुत अच्छी तरह से समझती हैं।

स्कूल के बाद, वह घर गईं और सोचने लगीं कि क्यों नहीं उन्होंने अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई की। उनकी माँ ने उन्हें समझाया, "तुम्हारे पास 9 वीं कक्षा में अंग्रेजी माध्यम स्कूल में जाने का विकल्प था, लेकिन तुमने वह नहीं लिया, तो यह हमारी गलती नहीं है।" फिर उन्होंने अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ाई करने का निर्णय लिया और दिन रात एक करके कड़ी मेहनत की और परीक्षा को पास किया जबकि उनके कक्षा में ज्यादातर बच्चे फेल हो गए थे।

जब वह घर लौटीं, उनके पिता ने कहा, "तुमने सिर्फ 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं, यह अच्छा प्रतिशत नहीं है। अगर तुम विज्ञान लेना चाहती हो तो इस प्रतिशत से यह संभव नहीं है।" उन्होंने सोचा, "हाँ, मेरे पिता सही कह रहे हैं।" उन्होंने अपने अगले परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त करने का लक्ष्य तय किया। इसके लिए उन्होंने रोज़ दिन और रात में सवालों को बार-बार पढ़ा। उन्होंने स्वयं अपना मूल्यांकन किया और अपनी प्रगति को देखा। वह कभी 80 प्रतिशत तो कभी 78 प्रतिशत अंक प्राप्त करती थीं ।

फिर उनका परीक्षा का दिन आया और परीक्षा खत्म करने के बाद, उनके चाचा ने उन्हें कुछ दिन अपने घर बुला लिया। जैसे-जैसे परिणाम की तारीख नजदीक आई, वह सिर्फ एक ही बात सोच रही थीं—कि उन्हें कितने प्रतिशत अंक मिलेंगे, उन्हें रैंक की कोई फिक्र नहीं थी। उन्हें चिंता थी तो इस बात की कि उनका प्रतिशत 80 से कम न आए। जब परिणाम आया, तो

उनके चाचा ने बताया कि उन्होंने 82 प्रतिशत अंक प्राप्त किए है। वह इस परिणाम से बहुत खुश हुईं।

इस कहानी से मुझे यह विश्वास हुआ कि अगर आप पूरी मेहनत से किसी चीज़ को करने का प्रयास करते हैं तो असंभव को भी संभव बना सकते हैं। जैसे उस शिक्षिका ने उन्हें शिक्षा में पूरी सहायता दी और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद की, वैसे ही हमें भी एक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।

- दर्शन जैन कक्षा – 7 डी

शिक्षक कोना

किला धामोनी : सागर की विरासत

गढ़ा मंडला वंश के एक वंशज, राजा सूरत शाह ने 15वीं शताब्दी में इस कस्बे को बसाया था| इसके बाद इस किले पर कई राजवंशों के राजाओं का अधिकार रहा | राजा सूरत शाह के बाद किला मुगलों के अधीन रहा , तत्पश्चात यह किला ओरछा के राजा वीरसिंहदेव के अधीन रहा जिनके द्वारा इसका जीर्णोद्धार करवाया गया | धमोनी के किले पर अधिकार के लिए मुगलों और बुंदेला राजाओं में लगातार संघर्ष होता रहा है

| राजा छत्रसाल ने औरंगजेब से लम्बे संघर्ष के बाद इस किले को अपने अधिकार में ले लिया लम्बे समय तक यह किला बुंदेलाओं के अधिकार क्षेत्र में रहा | बाद में इस पर मराठा भोंसले और तत्पश्चात अंग्रेजों ने इस पर आधिपत्य कर लिया |धमोनी किले की महत्त्वपूर्ण इमारतें धमोनी में किले के अन्दर की महत्त्वपूर्ण इमारतें हैं |

ये इमारतें गोंड, मुग़ल और राजपूत वास्तुकला से निर्मित हैं जिनसे हमें पता चलता है कि धमोली के किले के अन्दर स्थित इन इमारतों का निर्माण अलग-अलग राजवंशों ने करवाया होगा | धमोनी किला के अन्दर स्थित कुछ खास इमारतें निम्नलिखित हैं-
हाथीगेट,कचहरी,रानी,महल,बावड़ियाँ-सैनिक,छावनी,फांसी घर,गुप्त कुंए,मंदिर के खण्डहर,मस्जिद व मजार|,धमोली में एक मस्जिद और दो मज़ार भी हैं | इनमें से एक मजार मुगलों के दरवारी कवि अबुल फजल के गुरु बलजीत शाह के हैं | आस-पास उनके अनुयायियों की भी कब्रें हैं | दूसरी मजार मस्तान शाह वली की हैं | यहाँ साल में एक बार उर्स लगता है | धमोनी का उल्लेख आईन-ए-एकबरी में अब्दुल फजल द्वारा किया गया है।
दुर्ग के अन्दर के महलों में सुन्दर नक्कासी की गई है | दुर्ग के अन्दर हाथियों की खरीदी-विक्री की जाती थी |धमोनी किले को पुरात्तव विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है | धमोनी का किला अर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया (ASI) के अधीन आता है और इसके रख-रखाव व मरम्मत की जवाबदारी भी अर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया के है|
ऐसी किवदंती है कि बलजीत शाह के मजार पर मस्तान शाह वली दिया जलाया करते थे। एक रोज वे धामौनी पहुँचे, जहाँ उन्होंने लोगों से मनभर इच्छानुसार तेल देने को कहा। किसी

ने उन्हें तेल नहीं दिया। इस पर फकीर मस्तान शाह ने धामौनी के उजाड़ होने की बद्दुआ दी। तब से यह नगर उजाड़ हो गया।लोगों की मान्यता है कि धामौनी किले के पास ही मस्तान शाह की मजार बनी है, जो धीरे-धीरे धंस रही है, इसके धंसने के बाद धामौनी फिर आबाद होगा।

-श्री रूपेश मिश्रा

• बसन्त •

ये मौज का कृदंत, ये प्रकृति अनंत,
ये पक्षियों की चह, ये अनूठा बसंत।

ये अदृश्यता का रास, ये मौसमी प्रवास,
ये नवीनता सआस, जाता दुख कयास।

ये कलकलित तरंग, ये पुलकित उमंग,
विघ्नता थी अंग, उन्मुक्तता का संग।
ये शांति का बोध, ये अनित्यता प्रबोध,
अंतरात्मा का शोध, मनःस्थिति निरोध।

ये प्रकृति अनंत, ये अनूठा बसंत।
- **श्री अंशुल असाटी**

राजस्थान का लोक संगीत

राजस्थान का संगीत और सांस्कृतिक धरोहर अत्यंत समृद्ध है। यहाँ के लोक संगीत, जैसे कि गवई, मीराबाई के भजन, और कालबेलिया नृत्य, विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। राजस्थान की शास्त्रीय संगीत परंपराएं भी गौरवमयी रही है, जिनमें जयपुर घर्मन घराना प्रमुख है। राज्य में विभिन्न त्योहारों के दौरान पारंपरिक नृत्य, संगीत और नाट्य कला का आयोजन किया जाता है, जैसे कि उचियारिया, घूमर, और कालबेलिया नृत्य। इसके अलावा, मराठी की काव्य कला, और कठपुतली कला भी राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान का अहम हिस्सा है।हाल ही में हमारे स्कूल में राजस्थान के प्रसिद्ध लोक संगीतकारों द्वारा एक खास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को राजस्थानी लोक संगीत की विविधता और इसकी धरोहर से परिचित कराया गया। इस कार्यक्रम में राजस्थान के प्रतिष्ठित लोक कलाकारों ने अपने पारंपरिक वाद्य यंत्रों जैसे सारंगी, ढोलक, और मंजीरे के साथ लाइव प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने राजस्थानी लोक गीतों के साथ-साथ, भजन भी सुने, जो राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं। विशेष रूप से, कलाकारों ने कालबेलिया नृत्य और घूमर नृत्य की लाइव प्रस्तुति दी, जिसे देखकर छात्र मंत्रमुग्ध हो गए। इस कार्यक्रम के दौरान, लोक संगीत और नृत्य की तकनीकी बारीकियों पर एक कार्यशाला भी आयोजित की गई, जहाँ विद्यार्थियों को इन परंपराओं के महत्त्व और उनके संरक्षण के बारे में बताया गया। यह आयोजन न केवल सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने का एक अवसर था, बल्कि विद्यार्थियों को भारतीय लोक संगीत की समृद्ध धरोहर से जुड़ने का एक अद्भुत प्रयास था |

-श्री मुकेश कुमार चौधरी

विनम्र निवेदन

यद्यपि पत्रिका प्रकाशित करने से पूर्व यह ध्यान रखा गया है कि पत्रिका में कोई त्रुटि न रहे तथापि कोई त्रुटि रह गयी हो तो संपादक मंडल क्षमा प्रार्थी है ।पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

-संपादक

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक:-प्राचार्य ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल , खुरई
मुख्य संपादक:- डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव
टंकण सहयोग:- श्री नीरज श्रीवास्तव
छायांकन:- श्री प्रशांत सील
सहयोग:- हिंदी विभाग
तकनीकी सहायता:- अविनाश सविता

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यूआर स्कैन करे

ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. सीनियर सेकंडरी स्कूल , खुरई